B A part - II (Sub) (2) Date - 25.04.2020

उन्चास (सप्रसंग व्याख्या)

प्र० Q: 'मोंकान्त' मुँहो मोन मोहि छलै, मुदा तैयो मों सए मोन पड़ल छलै। तखन - तखन ओ बेर - विपत्तिमे पड़ि अछि ओमें बच्चा जकाँ ओकरो माय मोन की पड़ैत छैक जे दुःख व्याधि हारि लैत छैक।

उ० उत्तर: प्रस्तुत गद्यांश श्रीमती आभा मिश्र लिखित उन्चास उपन्यासँ लेल गेल अछि।

एहि उपन्यासक सम्पूर्ण कथावृत्त नव - किशोर वयक सोनूक संग घटित घटनाक विवेचना थिक। उद्धृत गद्यांश मातृहीन कथावृत्त नव - किशोर वयक सोनूक संग घटित घटनाक विवेचना थिक। उद्धृत गद्यांश मातृहीन सोनू जखन दशमे पढैत छल, तखन पिता घरक झगड़ा-झंझट सँ तंग आबि गेल छलाह। कारण सोनूक नवकी माय जोतियामें घरमे फेर देलनि, घरक शांति दूर भेल। तँ सोनूकेँ मौसा - मौसी लग पठा, गुड्डू आ बबलू कें मुजफ्फरपुर मे भाड़ाक मकान ल'क' पढ़वा लेल देल जेतनि। अपने नवकी स्त्री आ छुटकर नेना मोनू आ शशांक संग बबली सेहो जमशेदपुर लऽ जेताह।

(2)

ने" सोनूकेँ नानी गाम ल' जेबाक तैल कहल
गेल त' ओ बाबी केँ कहलनि- हमरा ककरो
लगा नहि जेबाक अछि। हम तोर लग रहब। एतबा
सुनितहि सोनूक बाबा बाबाक दृष्टिसँ सोनूकेँ
ओधर-बाधक' ताबड़तोड़ मारय लगलथिन।
सोनू मारिसँ बेसुधि भऽ गेल मुदा मारिक चोट से
बेसी ओकरी माएकेँ बाजब - अपने त' मरि गेली
आ-चारिटा सुन्द-मुसुन्दकेँ हमर छाती पर जाँत
परहन छोड़ि गेली। ओ किछु नहि बाजल मुदा
आइ माँ बड़ मोन पड़ली। जखन-जखन ओकरा
पर आफत - आसमानी अबैत छै सबसँ पहिने
माँ मोन पड़ैत छै। जखन कि हमरा माँक मुँहो मोन
नहि अछि, तइयो माँक स्मरण करिते सब दुख-व्याधि
हरि लैत छथि। माँ अपन संतानकेँ दुखी कोना देखि
सकैत अछि। माँ त' संकट हारिणी होइछ।

शनी मिश्रा
मैथिली विभाग
R.N College
Pandaul, Madhubani

Scanned with CamScanner